विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुदृढ होता है। उसके भीतर रह कर कोई भी प्राणी असुरक्षा अनुभव नहीं करता। –अज्ञात

आप भी सोचे और बताएं!

हाल में आई एक ख़बर ने हम सबका ध्यान ही आकर्षित नहीं किया, हमें गर्व करने का अवसर भी दिया। ख़बर आई थी सुदूर लंदन से जहां एक भारतीय छात्र सत्यम सुराना ने जैसे ही भारतीय तिरंगे झण्डे को ज़मीन पर पड़ा देखा वे उसे उठाने के लिए सक्रिय हो उठे। महत्वपूर्ण बात यह कि उस तिरंगे झण्डे का अपमान खालिस्तानी आंदोलनकारियों द्वारा किया जा रहा था और इसलिए जब सत्यम ने उसे अपमान से बचाने का प्रयास किया तो उन्होंने खालिस्तानी अंदोलनकारियों के ग़ुस्से के सामने भी स्वयं को खड़ा कर लिया। कहना अनावश्यक है कि उस वक़्त सत्यम के लिए अपनी जान बचाने से ज़्यादा कीमती था भारत के झण्डे का मान बचाना। ऐसा करके उन्होंने ख़ुद के सच्चा भारतीय नागरिक और सच्चा देश भक्त होने का प्रमाण दिया।

इस ख़बर को पढ़ते हुए जहां मेरा मन सत्यम के प्रति गर्व से भर उठा वहीं कुछ और बातों की तरफ़ भी मेरा ध्यान गए बग़ैर नहीं रह सका। इन कुछ और बातों में सबसे ख़ास बात तो यह है कि क्या हम अपने देश में भी अपने तिरंगे झण्डे का ऐसा ही सम्मान होते देखते हैं?

यह पढ़कर हरेक की पहली प्रतिक्रिया तो यही होगी कि हां, हम सब अपने तिरंगे झण्डे का सम्मान करते हैं। सैद्धांतिक रूप से तो मैं भी यही मानता हूं, लेकिन व्यवहार में मैं इससे अलग व्यवहार भी देखता हूं। इस सब की चर्चा से पहले थोड़ा पीछे जाना होगा। आज़ादी के बाद से बहुत लम्बे समय तक भारत में आम नागरिकों के लिए तिरंगा झण्डा फहराने का अधिकार बहुत सीमित था। ध्वज संहिता के प्रावधानों के अनुसार आम नागरिक कुछ ख़ास दिनों को छोड़कर अन्य दिनों में तिरंगा झण्डा फहराने के लिए अधिकृत नहीं था। 1992 में इस बात के ख़िलाफ एक नागरिक और उद्योगपति नवीन जिंदल ने कानूनी संघर्ष शुरू किया। वे इससे पहले अमरीका के टेक्सस शहर में रह कर पढ़ाई कर रहे थे, और जैसा कि सभी जानते हैं अमरीका में कोई भी, कभी भी, किसी भी तरह से अपने राष्ट्रीय ध्वज का प्रयोग कर सकता है। इस अनुभव के बाद भारत का अनुभव नवीन जिंदल को बहुत अखर रहा था। वे समर्थ थे, उन्होंने लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी और अंततः भारत सरकार ने यह आदेश ज़ारी किया कि सन् 2002 के गणतंत्र दिवस से कोई भी भारतीय नागरिक किसी भी दिन, कुछ प्रावधानों के अनुरूप, सम्मानपूर्वक तिरंगा फहरा सकता है। सरकार ने एक नई ध्वज संहिता, 2002 ज़ारी की। नवीन ज़िंदल की यह जीत बहुत बड़ी थी। वे प्रावधान क्या हैं, उनके विस्तार में गए बिना भी यह जाना-समझा जा सकता है कि हर नागरिक से यह अपेक्षा है कि वह ध्वज तो फहराए लेकिन किसी भी तरह उसका अपमान न होने दे। इन प्रावधानों में एक प्रावधान यह भी है कि फहराया जाने वाला ध्वज किसी भी तरह से क्षति ग्रस्त न हो अर्थात कटा-फटा या विरूपित न हो। यह भी कि अगर वह कपड़े का हो तो कपड़ा गंदा या मैला न हो और अगर कागज़ का हो तो उसे लगा लेने के बाद लापरवाही से कचरे में न फेंका जाए। ये सारे प्रावधान ध्वज के सम्मान के निमित्त हैं।

अब इस बात को याद कीजिए कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर हमारी सरकार ने 'हर घर तिरंगा' नाम से एक अभियान चलाकर हम नागरिकों से यह अनुरोध किया कि हम सब अपने-अपने घरों पर तिरंगा फहराएं। यह बहुत अच्छी बात थी। लेकिन अब ज़रा पीछे मुड़कर 15 अगस्त के बाद के दृश्यों को याद कीजिए। लोग अपने घरों पर झण्डे लगाने के बाद उन्हें उतारना भूल ही गए थे और वे झण्डे अपनी बदहाली पर आंसू बहाते रहे। मुहल्लों में हर तरफ कटे फटे झण्डे सड़कों पर नज़र आ रहे थे। जब तक ठीक था, लगा रहा। फिर उसे उतार कर कचरे के ढेर पर फेंक दिया। स्पष्ट ही यह हमारे राष्ट्र ध्वज का अपमान था, और चाहे लापरवाही के कारण ही सही, हममें से ज़्यादातर लोग यह अपमान कर रहे थे। अब भी करते हैं।

पंद्रह अगस्त छब्बीस जनवरी पर हर शहर कस्बे के चौराहों पर तिरंगे झण्डे बेचने वाले नज़र आने लगते हैं, हममें से बहुत सारे लोग उनसे झण्डे खरीदते हैं, घरों या अपनी गाड़ी वगैरह पर लगाते हैं और दो-चार दिन बाद उस झण्डे को कचरे के ढेर पर फेंक देते हैं। ऐसा करना स्पष्ट रूप से राष्ट्रीय ध्वज का अपमान है, लेकिन हम करते हैं। हम अपमान करना नहीं चाहते हैं, लेकिन बेध्यानी में जो करते हैं वह होता अपमान ही है।

पंद्रह अगस्त छब्बीस जनवरी पर हर शहर कस्बे के चौराहों पर तिरंगे झण्डे बेचने वाले नज़र आने लगते हैं, हममें से बहुत सारे लोग उनसे झण्डे खरीदते हैं, घरों या अपनी गाड़ी वगैरह पर लगाते हैं और दो-चार दिन बाद उस झण्डे को कचरे के ढेर पर फेंक देते हैं। ऐसा करना स्पष्ट रूप से राष्ट्रीय ध्वज का अपमान है, लेकिन हम करते हैं। हम अपमान करना नहीं चाहते हैं, लेकिन बेध्यानी में जो करते हैं वह होता अपमान ही है।

असल में यह बेध्यानी हमारे स्वभाव का अटूट अंग है। आप एक और पर्व को याद कीजिए। हाल में गणेश चतुर्थी का त्योहार हमने मनाया था। बड़े मान-सम्मान से हम गणपति बप्पा को अपने घर लाए, उनकी पूजा आराधना की और फिर एक दिन यथा-रीति उन्हें विसर्जित करने के लिए ले गए। इस साल एक तस्वीर सारे माध्यमों में खूब चली जिसमें एक कचरा गाड़ी में बहुत सारे टूटे-फूटे गणेश ले जाए जा रहे थे। अगर यह तस्वीर न होती तब भी यथार्थ ऐसा ही होता। यह था अपने बहुत लाड़ले, श्रद्धेय और प्रथम पूज्य गणपति के साथ हमारा बर्ताव। गणपति को श्रद्धा के साथ, सम्मान के साथ गरिमा के साथ भी विसर्जित किया जा सकता है और कचरे के गाड़े में भी डाला जा सकता है। सब ऐसा खराब बर्ताव नहीं करते हैं, लेकिन जो करते हैं, उनकी तरफ ध्यान तो आकर्षित किया ही जाना चाहिए।

फिर तिरंगे पर लौटें। ध्वज चाहे कपड़े का हो या कागज़ का, अंततः तो वह खराब होगा ही। वैसी स्थिति में उसका प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। और उसके निस्तारण के लिए, सम्मानजनक निस्तारण के लिए, ध्वज संहिता में बाकायदा एक प्रक्रिया निर्धारित की गई है। अगर हम ध्वज फहरा कर गर्व का अनुभव कर रहे हैं तो एक नागरिक के रूप में हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम ध्वज संहिता के प्रावधानों को जानें-समझें और तदनुरूप आचरण कर ध्वज को पूरा सम्मान दें। कहते हैं न कि आज़ादी अपने साथ ज़िम्मेदारियां भी लाती है। अगर हमें अपने घरों पर कभी भी झण्डा फहराने की आज़ादी मिली है तो वह निर्बाध नहीं है। उसके साथ ज़िम्मेदारियां भी हैं और अगर हम उन ज़िम्मेदारियों का निर्वहन नहीं करते हैं तो हम ख़ुद यह घोषित करते हैं कि हम उस आज़ादी के हक़दार नहीं हैं।

दुर्भाग्य से हम अपने व्यवहार से यह साबित करने में नाकामयाब रहे हैं कि हम अपनी आज़ादी का पालन पूरी ज़िम्मेदारी से कर रहे हैं। हमें आज़ादी तो चाहिए, लेकिन उस आज़ादी का प्रयोग करने का सलीका अभी हमें सीखना है। हमारे समग्र आचरण में एक लापरवाही का भाव, चलता है का भाव, और व्यवस्था को ठेंगा बताने का भाव सदा विद्यमान रहता है। आप चौराहों पर ट्रैफ़िक लाइट्स की अनदेखी करते वाहन चालकों को देखें या साइलेंस ज़ोन में हॉर्न बजाते लोगों को देखें, सभा सम्मेलनों और थिएटरों में 'कृपया अपने मोबाइल को साइलेण्ट मोड पर कर लें' के अनुरोध की अनदेखी कर अपने मोबाइलों पर बुलंद आवाज़ में बतिया कर औरों का सुख चैन छीनते लोगों को देखें या 'यहां थूकना मना है' के ठीक नीचे पान की पीक से चित्रकारी करते लोगों को देखें, क्यू तोड़कर आगे जाते लोगों को देखें या छह लोगों को ले जाने वाली लिफ़्ट में घुसते दस लोगों को देखें, हर जगह आप पाएंगे कि व्यवस्था और नियमों के प्रति कोई आदर भाव हमारे मनों में नहीं है। हमें लगता है कि उनकी अवहेलना करके ही हम अपने शक्तिशाली होने का प्रदर्शन कर सकते हैं।

ऐसे में इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए को राष्ट्रीय पर्वों पर अपने घरों या वाहनों पर तिरंगा फहराने वाले लोग उसे समुचित सम्मान देने के मामले में फिसड्डी साबित होते हैं। विदेश में अपनी जान पर खेलकर तिरंगे का मान बचाने वाले सत्यम सुराना की भले ही हम उन्मुक्त सराहना कर लें, जब अपनी बारी आती है तो वह सब कुछ भूल जाते हैं। असल में हमें किसी भी नियम का पालन करना रास नहीं आता है। हम अपनी मर्ज़ी के मालिक हैं। हमारे लिए आज़ादी का यही अर्थ है। ऐसे में हमें सोचने को विवश होना पड़ता है नवीन जिंदल ने हर भारतीय को तिरंगा फहराने का अधिकार दिलवा कर सही किया या ग़लत! क्या हम इस काबिल हैं कि हमारे पास हर दिन हर कहीं तिरंगा फहराने का अधिकार रहे? मैं चाहता हूं कि तिरंगे प्रति अपने बर्ताव पर विचार करते हुए अपने समग्र जीवन में एक नागरिक के रूप में अपने बर्ताव पर भी गम्भीरता से विचार करें और सोचें कि जो स्थितियां हैं उन्हें कैसे बदला और बेहतर बनाया जा सकता है!

आप भी सोचें!, और बताएं!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

नारी सम्मान वन्दन और देवी माँ की आराधना का पर्व नवरात्रि

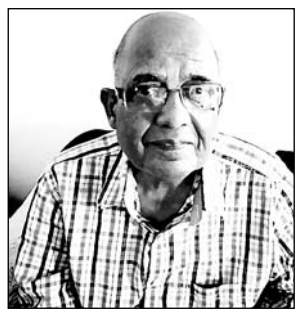

डॉ. जे. के.गर्ग

नव और रात्र शब्दों से मिलकर बना है नवरात्रि। नव का अर्थ है नौ है वहीं रात्र शब्द में पुनः दो शब्द शामिल हैं रा का अर्थ है रात और त्रि का अर्थ है जीवन के तीन पहलू यानी शरीर मन और आत्मा। निःसंदेह जीवन में हर एक को तीन प्रकार की मुश्किल समस्याओं का सामना करना ही पड़ता है वों भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक होती है। इन सभी समस्याओं से जो छुटकारा दिलवाने वाली रात्रि ही होती है। रात्रि या रात मनुष्यों को दुख से मुक्ति दिलाकर उनके जीवन में यश सुख-सुविधा खुशहाली लाती है। सच्चाई तो यही है आदमी को आराम सिर्फ रात्री में ही मिलता है। शक्ति स्वरूप माता की आराधना के नवरात्रि के नो दिन माने गए हैं। जहाँ चैत्र नवरात्रि के दौरान कठिन साधना और कठिन व्रत का महत्व है वहीं दुसरी तरफ शारदीय नवरात्रि के नौ दिन के दौरान सात्विक साधना, नृत्य, उत्सव आदि का आयोजन किया जाता है।

चूंकि आश्विन मास में शरद ऋतु का प्रारंभ हो जाता है, इसलिए इसे शारदीय नवरात्रि कहा जाता है। मान्यता है कि चैत्र नवरात्रि की साधना आपको मानसिक रूप से मजबूत बनाती है और आध्यात्मिक इच्छाओं की पूर्ति करने वाली है। वहीं शारदीय नवरात्रि सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने वाली मानी जाती है। नवरात्रि माँ के अलग-अलग रूपों को निहारने और उत्सव मनाने का पर्व है। मान्यताओं के अनुसार देवी दुर्गा ने अश्विन के महीने में महिषासुर पर आक्रमण कर उससे नौ दिनों तक युद्ध किया और दसवें दिन उसका वध किया इसलिए इन नौ दिनों को शक्ति की आराधना के लिए समर्पित कर दिया गया है। कहा जाता है कि शारदीय नवरात्रि धर्म की अधर्म पर और सत्य की असत्य पर जीत का प्रतीक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन्हीं नौ दिनों में मां दुर्गा धरती पर आती है और धरती को उनका मायका कहा जाता है। उनके आने की खुशी में इन दिनों को दुर्गा उत्सव के तौर पर देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है।

चैत्र नवरात्रि के अंत में राम नवमी आती है। धार्मिक मान्यता के है कि प्रभु श्रीराम का जन्म रामनवमी के दिन ही हुआ था। जबकि शारदीय नवरात्रि के अंतिम दिन महानवमी के रूप में मनाया जाता है। शारदीय नवरात्रि के के अगले दिन विजयादशमी पर्व होता है। विजयदशमी के दिन माता दुर्गा ने महिषासुर का मर्दन किया था और प्रभु श्रीराम ने रावण का वध किया था। हमारी चेतना के अंदर सतोगुण, रजोगुण और तमो गुणव्याप्त हैं। प्रकृति के साथ इसी चेतना के उत्सव को नवरात्रि कहते है। इन 9 दिनों में पहले तीन दिन तमोगुणी प्रकृति की आराधना करते हैं, दूसरे तीन दिन रजोगुणी और आखिरी तीन दिन सतोगुणी प्रकृति की आराधना का महत्व है। नवरात्रि के इस पावन त्योहार पर देश के उत्तर भारत के कई स्थानों पर कन्या पूजन किया जाता है। लोग इसलिए उनकी पूजा करते है क्यूंकि उन्हें वे देवी माँ का रूप समझते है। पार्वती, लक्ष्मी और सरस्वती के ही विभिन्न नौ स्वरूपों को नवदुर्गा के नाम से जाना जाता है। नवरात्रों में हम पहले तीन दिन पार्वती के तीन स्वरूपों की पूजा-आराधना करते हैं वहीं अगले तीन दिन में लक्ष्मी माता के तीन रूपों की आराधना करते है वहीं आखिरी के तीन दिन में माता सरस्वती के तीन स्वरूपों की पूजा-अर्चना की जाती हैं। नवरात्रि के इस उत्सव पर कई प्रकार की पौराणिक मान्यता। मान्यता के अनुसार इन नौ दिनों में श्रीराम ने सीता माता को रावण की कैद से छुड़वाने के लिए देवी दुर्गा की आराधना की थी। उन्होंने 108 कमलो की पूजा नौ दिनों तक की थी। जिसके पश्चात देवी दुर्गा उनके इस पूजा से प्रसन्न हो कर उन्हें विजयी होने का आशीर्वाद दिया था। उसके पश्चात राम ने अंहकारी रावण का वध किया था। इसी संदर्भ में यह भी जानना जरूरी है कि धार्मिक ग्रन्थों में दुर्गा सप्तशती के अन्तर्गत देव दानव युद्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है। पहला नवरात्र बालिकाओं को, दूसरा नवरात्र युवतियों तथा तीसरा नवरात्रा महिलाओं के चरणों में समर्पित है।

सच्चाई तो यही है आदमी को आराम सिर्फ रात्री में ही मिलता है। रात की गोद में हम सभी अपने सारे सुख दुःख को भूल कर नींद का आनन्द लेते है। भारत में सदैव से नारी को देवी तुल्य मान कर सम्मान देने की गौरवमयी परंपरा चली आ रही है। नवरात्रि के पहले दिन शैलपुत्री माँ की पूजा की जाती है। उनकी आराधना करने से लोगो को एक किस्म की ऊर्जा मिलती है। नवरात्रा की प्रथम देवी शैलपुत्री के जरिये हमारे ऋषि-मुनि जहाँ हम लोगों को पहाड़ों के प्राक्रतिक स्वरूप एवं पर्यावरण को सुरक्षित बनाये रखने का संदेश देते हैं।

नारी सम्मान वन्दन और देवी मां की आराधना का पर्व नवरात्रि, नवरात्रि के दूसरे दिन देवी दुर्गा के ब्रह्मचारिणी स्वरुप की आराधना की जाती है। इसका उद्देश्य है कि हम इस दुनिया में अपना लक्ष्य प्राप्त कर सके और अपनी पहचान बना सके। वहीं दूसरी तरफ देवी ब्रह्मचारिणी के माध्यम से हम सभी को जीवन में ब्रह्मचर्य का पालन करते रहने के साथ साथ नवीन ज्ञान प्राप्ति करते हए नये नये शोध कार्य करते रहने का संदेश देती है। नवरात्रि के तीसरे दिन भक्त देवी दुर्गा के चंद्रघंटा स्वरूप की पूजा करते है। चंद्रघंटा इसलिए नाम दिया गया है, क्यूंकि माँ का स्वरुप चाँद के जैसे चमकता है। इनकी पूजा करने से मन में उत्पन्न सारे नकारात्मक और गलत विचार दूर हो जाते है।

नवरात्रि के चौथे दिन लोग दुर्गा माँ के कूष्माण्डा स्वरूप की पूजा करते है। इनकी पूजा करने से हम उन्नति की राह पर चलते है और इनका आशीर्वाद हमारे सोचने-समझने की शक्ति को बेहतर तरीके से विकसित करता है। देवी कूष्मांडा भी हम सभी को संसार में माता-बहनों के अस्तित्व का बोध कराती है इसीलिये देवी कूष्मांडा को नारी सम्मान तथा सृष्टि रचना में उन्हें अक्षुण्ण बनाये रखने वाली देवी के रूप में जाना जाता है। नवरात्रि के पांचवे दिन स्कंदमाता की पूजा की जाती है। इनके पूजा करने से भक्तों के अंदरूनी व्यवहारिक ज्ञान को विकसित करने के लिए उनका आशीर्वाद मिलता है। नवरात्रि के छठे दिन देवी दुर्गा के कात्यायनी स्वरूप की पूजा की जाती है। माँ कात्यायनी की आराधना करने से मनुष्य के अंदर के नकारात्मक विचार दूर हो जाते है। माँ के दिए हुए आशीर्वाद से हम सही मार्ग पर चल सकते है। नवरात्रि के सातवें दिन पर देवी दुर्गा के कालरात्रि के स्वरूप की पूजा करते है। देवी कालरात्रि की पूजा करने से लोगो को अपने जीवन में यश, सम्मान और कीर्ति प्राप्त होता है। नवरात्रि के आठवें दिन देवी दुर्गा के महागौरी के स्वरूप की आराधना की जाती है। इनकी आराधना करने से मनुष्य की सारी मन की इच्छा पूरी हो जाती है। शांति का संदेश वाहक सफेद रंग से सुशोभित माता महागोरी सभी सिद्धियों को संतुष्ट करने वाली हैं। नवरात्रि के नौवे दिन देवी दुर्गा के सिद्धिदात्री स्वरूप की आराधना लोगों द्वारा की जाती है। इनकी पूजा करने से हमें ताकत मिलती है कि हम मुश्किल कार्य को सफलतापूर्वक कर सके। उन अधूरे कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करना। नवदुर्गा के नो स्वरूप महिलाओं के पूरे जीवन चक्र का प्रतिबिम्ब ही हैयानिशैलपुत्री जन्म ग्रहण करती हुई कन्या का स्वरूप है, 'ब्रह्मचारिणी' नारी का कौमार्य अवस्था प्राप्त होने तक का रूप है, वहीं नारी शादी से पूर्व तक चंद्रमा के समान निर्मल होने की वजह से 'चंद्रघंटा' के समान है। जब महिला शिशु को जन्म देने के लिये गर्भवती बनती है तो वह 'कूष्मांडा' का स्वरूप है वहीं नारी शिशु को जन्म दे देती है तो वह 'स्कन्दमाता' बन जाती। संयम व साधना को धारण करने वाली नारी 'कात्यायनी' का स्वरूप हो जाती है। सती सावित्री के समान अपने संकल्प से पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से नारी 'कालरात्रि' जैसी बन जाती है। जीवन पर्यन्त अपने परिवार को संसार मानकर उसका उत्थान और उन्नयन करने वाली नारी 'महागौरी' हो जाती है और अंत में नारी अपने सभी दायित्वों का निर्वहन करने के बाद धरती को छोड़कर स्वर्गारोहण करने से पहले संसार मे अपनी संतान को सिद्धि और सम्पदा का आशीर्वाद देने वाली 'सिद्धिदात्री' बन जाती है।

–डॉ. जे. के.गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कॉलेज शिक्षा जयपुर

राजस्थान को पुनर्जीवित करना : नेतृत्व, जवाबदेही और जुनून का आव्हान

मरियम अबुहैदेरी

मेरे मन में एक प्रश्न है:–'क्या भाजपा राजस्थान के जानवरों और जंगलों के लिए वह परिवर्तन प्रदान करेगी जो मैं चाहती हूँ? मुझे यहां यह स्पष्ट करना चाहिए कि अशोक गहलोत और उनकी नीतियों के कारण वर्तमान स्थिति के प्रति मेरा असंतोष एक ऐसी भावना है जिसे व्यक्त करने की मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी, अपने परिवार की कट्टर कांग्रेस निष्ठा को देखते हुए, जो भारत में कई मुसलमानों और पारसियों के लिए प्रतीक है। हालाँकि, सिस्टम से जुड़ने के मेरे अथक प्रयासों ने मुझे एक महत्वपूर्ण सबक सिखाया है। राजस्थान को कुछ उल्लेखनीय हासिल करने की इच्छाशक्ति वाले नेताओं की आवश्यकता है – ऐसे नेता जो ठोस प्रगति के लिए प्रतिबद्ध उत्साही व्यक्तियों की टीमों को इकट्ठा कर सकें। हो सकता है कि मुझे राजस्थान में मतदान का विशेषाधिकार न हो, लेकिन मैं सोनिया गांधी को देखती हूं और इस बात से सांत्वना लेती हूं कि कम से कम मैं इस भूमि पर पैदा हुई हूं और मैं उनसे अधिक भारतीय हूं। नेतृत्व करने के लिए मुझे किसी भारतीय से शादी नहीं करनी पड़ेगी। मैं काफी हूँ।

मैं राजनीतिक करियर के लिए आदर्श उम्मीदवार नहीं हूं और न ही मैं राजनीतिक टिकट के लिए पात्र हूं, क्योंकि मेरी विशेष प्रतिबद्धता जानवरों के हित के लिए रही है। बहरहाल, इस उद्देश्य के प्रति मेरे समर्पण ने मुझे राजस्थान के जटिल राजनीतिक परिदृश्य में अमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की है। और आज की मेरी टिप्पणी इस चौराहे के बारे में है जिस पर हम हैं। परिवर्तन की दिशा में हमारी यात्रा एक साहसी नेता की आवश्यकता के साथ शुरू होती है, जो राजस्थान की समस्याओं का डटकर मुकाबला कर सके। सिस्टम के हर विभाग में भ्रष्टाचार और पद बेमेल समेत, ऐसी समस्याएं हैं जिनके बारे में मेरा मानना है कि पार्टी को कोई संदेह नहीं है।

उदाहरण के लिए, स्थानीय स्वशासन (एलएसजी) प्रणाली – सबसे अधिक भ्रष्टाचार से भरे विभागों में से एक – को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो लाक्षणिक रूप से संरचना को ढहा सके, उसे ध्वस्त कर सके और फिर उसका पुनर्निर्माण कर सके। राजस्थान एलएसजी प्रणाली के भीतर व्याप्त गंदगी और भ्रष्टाचार को केवल नए चेहरे लाने से साफ नहीं किया जा सकता है। लेकिन सवाल यह है कि हमारे राज्य में इतना बड़ा काम करने का साहस किसमें है? राजस्थान कई महत्वपूर्ण समस्याओं से जूझ रहा है, जिनमें से एक हमारे मानव संसाधनों का प्रभावी ढंग से दोहन करने में हमारी असमर्थता है। हम अनावश्यक होते हुए भी केवल रोजगार उत्पन्न करने के लिए पद सृजित करते हैं, और हम पर्याप्त प्रशिक्षण प्रदान करने में विफल रहते हैं। राज्य के सचिवालय या किसी सरकारी विभाग का दौरा इस कमी की याद दिलाता है। यह एक प्रश्न है जो बना हुआ है: हम इस अराजकता को कैसे सुधारें और राजस्थान में कुशल शासन सुनिश्चित करें? इससे भी गहरा मुद्दा इस तथ्य से उठता है कि एक बार जब कोई व्यक्ति राजस्थान में सरकारी सेवा में आ जाता है, तो उसका निलंबन लगभग असंभव होता है, और वे सेवानिवृत्ति के बाद ही नौकरी छोड़ते हैं। नौकरी की यह सुरक्षा सत्ता में बैठे लोगों में आत्मसंतुष्टि पैदा करती है, हाशिये पर पड़े और अन्याय सह रहे लोगों को बिना किसी सहारे के छोड़ देती है, जिससे भ्रष्टाचार को और बढ़ावा मिलता है।

निंदक यह दावा कर सकते हैं कि राजस्थान में परिवर्तन असंभव है, और कुछ तकनीकी अर्थों में, वे सही भी हो सकते हैं। हालाँकि, मेरा मानना है कि राज्य के लिए आगे बढ़ने का एक रास्ता है: हमें यहां सत्ता के पदों पर सही लोगों को बिठाना चाहिए। हमें ऐसे नेताओं की जरूरत है जिनके पास दूरदृष्टि हो, गलत काम की निंदा करने का साहस हो और सकारात्मक बदलाव का समर्थन करने का जुनून हो। मैंने करीब से देखा है कि हालांकि राजस्थान सरकार के भीतर कई लोग जानवरों के लिए न्याय मांगने के मेरे प्रयासों का चुपचाप समर्थन कर सकते हैं, लेकिन दंडात्मक पोस्टिंग के डर से वे सार्वजनिक रूप से अपना नाम इस मुद्दे से जोड़ने से हिचकते हैं। यह विडंबनापूर्ण है कि खराब प्रदर्शन करने वाले अधिकारी वातानुकूलित कार्यालयों में बिना किसी चुनौती के आराम का आनंद लेते हैं, जबकि जो लोग नैतिक पशु कार्यकर्ताओं का समर्थन करने सहित समाज के लिए सकारात्मक प्रयासों का समर्थन करना चाहते हैं वे डर का बोझ झेलते हैं।

यह समस्या नगर निकायों से परे और राजस्थान न्यायपालिका तक फैली हुई है। क्या हम कभी राजस्थान के न्यायाधीशों को पशु क्रूरता और बलात्कार के मामलों में न्याय करते देखेंगे? क्या हमारे राज्य में निर्दोष पीड़ितों को अन्यायपूर्ण अभियोगों से बचाया जाएगा? हालांकि हर कोई पशु अधिकारों को प्राथमिकता नहीं दे सकता है, लेकिन हमें ऐसे नेताओं का चुनाव करना चाहिए जो 'एक स्वास्थ्य' की अवधारणा को समझते हैं और इसे राजस्थान में अपने अभियान प्लेटफार्मों में शामिल करते हैं।

हाल ही में, मैं पशु अधिकारों की मान्यता के लिए एक महीने तक चलने वाले उत्सव की योजना बनाने में लगी हुई हूं और राजस्थान में विश्व पशु दिवस समारोह के लिए राजनेताओं को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित करने के मेरे प्रयासों को निराशा हाथ लगी है, यहां तक कि पशुपालन विभाग भी नहीं आया है। यदि भूमिकाएँ उलट दी जातीं और मुझे ऐसे आयोजनों में भाग लेने के लिए कहा जाता, तो मैं न केवल भाग लेती बल्कि उनका समर्थन भी करती और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करती। हालाँकि, परिवर्तन लाने की शक्ति हमारे राज्य में पद पर बैठे लोगों के पास है। क्या वे भ्रष्टाचार और उदासीनता के ख़िलाफ़ कार्रवाई करेंगे? केवल समय बताएगा।

निष्कर्षतः, राजस्थान की व्यवस्था में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। हमें जवाबदेही और एक ऐसे नेता की ज़रूरत है जो विशेष रूप से हमारे राज्य में भय और जुनून दोनों को प्रेरित करे। रोजगार के लिए पद सृजित करने के बजाय योग्यता और दूरदर्शिता को राजस्थान में नियुक्तियों का मार्गदर्शन करना चाहिए। हमें दूसरे से सीखना चाहिए राज्यों और राष्ट्रों को इस बारे में बताना होगा कि राजस्थान में नागरिकों सहित हमारे लोगों की भलाई कैसे सुनिश्चित की जाए। हमारे युवाओं पर सरकारी पदों के लिए तैयारी करने का दबाव, जिसके बाद केवल एक छोटे प्रतिशत की चयनात्मक भर्ती होती है, बहुमत को भ्रम और दुख की स्थिति में छोड़ देती है। राजस्थान को परिवर्तन, भ्रष्टाचार के उन्मूलन, मजबूत नेतृत्व, इच्छाशक्ति और राज्य में जानवरों, महिलाओं और बच्चों सहित कमजोर लोगों के लिए एक खुशहाल और सुरक्षित भविष्य की दृष्टि की सख्त जरूरत है। यह आगामी चुनाव वह अवसर हो सकता है जिसका हम इंतजार कर रहे थे। राजस्थान की जनता सोच-समझकर चुनाव करे।

–मरियम अबुहैदेरी

सरहद की निगेहबान है "तनोट माता"

जैसलमेर, (नि.सं.)। रूमाल वाली देवी कही जाने वाली तनोट माता के प्रति सरहद के बाशिंदे ही नहीं बल्कि देश-दुनिया में बसे असंख्य लोगों की आस्था है। हर वर्ष कई नामी-गिरामी हस्तियां भी यहां दर्शन के लिए पहुंचती है। गौरतलब है कि भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा की निगहबानी का काम जितना सीमा सुरक्षा बल निभा रहा है, बल की उतनी ही हिफाजत सरहदी क्षेत्र में चमत्कारिक तनोटराय माता करती है। वर्ष 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान पाकिस्तान की ओर से करीब 3 हजार बम बरसाए गए लेकिन वे फट नहीं पाए। उनमें से 450 जिंदा बम आज भी मंदिर में माता के साक्षात चमत्कार के तौर पर सजा कर रखे गए है। तनोट माता को रुमाल वाली देवी के नाम से भी जाना जाता है। माता के प्रति आस्था रखने वाले भक्त मंदिर में रुमाल बांधकर मन्नत मांगते हैं।

■ **माता के प्रति आस्था रखने वाले भक्त मंदिर में रुमाल बांधकर मन्नत मांगते हैं**

मन्नत पूरी होने पर श्रद्धालु माता का आभार व्यक्त करने फिर से आते हैं और रुमाल खोलते हैं। इस परम्परा का निर्वहन आम लोगों की तरह यहां आने वाले मंत्री प्रशासनिक अधिकारी, सेना व सीमा सुरक्षा बल के अधिकारी व जवान भी करते हैं। बॉर्डर से महज 18 किलोमीटर पहले विशालकाय तनोट मंदिर में आज यात्रियों की सुख-सुविधा के तमाम इंतजाम है। इसका पूरा जिम्मा सीमा सुरक्षा बल के जवान और अधिकारी ही उठाए हुए हैं। यही कारण है कि यहां आध्यमिकता के साथ देशभक्ति के रंग भी बिखरे नजर आते हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 16 अक्टूबर, 2023

आश्विन मास, शुक्ल पक्ष, द्वितीया तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, स्वाती नक्षत्र सांय 7:35 तक, विष्कुम्भ योग प्रातः 10:02 तक, बालव करण दिन 12:53 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-तुला, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मेष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग रात्रि 7:35 से सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन उत्तर श्रृंगोन्नति है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:56 तक, शुभ 9:21 से 10:47 तक, चर 1:38 से 3:04 तक, लाभ-अमृत 3:04 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:30, सूर्यास्त 5:55

मेष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। दिनचर्या में में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

कर्क
परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में आपसी मतभेद बढ़ सकते हैं। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। आज मनःस्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृश्चिक
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। व्यक्तिगत कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

धनु
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास